Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 04, (सितंबर, 2025)
पृष्ठ संख्या 36–38

गुलदाउदी पुष्प उत्पादन की तकनीक

अनोप कुमारी[1], महेश चौधरी[2] एवं योगेन्द्र कुमार मीना[3]

[1]सहायक आचार्य–बागवानी, उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, झालावाड़, कृषि विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान

[2]वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, झालावाड़, कृषि विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान

[3]विषय वस्तु विशेषज्ञ–बागवानी, कृषि विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत।

Email Id: – balodamahesh@gmail.com

गुलदाउदी जिसका वानस्पतिक नाम *डैन्ड्रेन्थीमा ग्रैंडीफ्लोरा* है। यह बहुवर्षीय शाकीय सजावटी पुष्पीय पौधा है जिसे ऐस्टेरेसी कुल के अंतर्गत श्रेणीबद्ध किया गया हैं। यह जापान का राष्ट्रीय पुष्प है एवं इसका उत्पत्ति स्थल चीन को माना जाता है। भारत में यह सर्वश्रेष्ठ दस खुले फूलों (लूज फ्लावर) की श्रेणी में गुलाब एवं गेंदें के बाद तीसरे स्थान पर आती है। पुष्पों में गुलदाउदी अपने मनमोहक रंग एवं विभिन्न आकार–प्रकार के कारण बहुत आकर्षक लगती है जिन्हे देखकर हर कोई मंत्रमुग्ध हो जाता है। इसके फूलों में विभिन्नताओं के कारण ही इसे फूलों की रानी का खिताब प्रदान किया गया है। इसे सामान्यतः **"ग्लोरी ऑफ इस्ट"** के नाम से भी जाना जाता है। ग्रीक भाषा के अनुसार गुलदाउदी शब्द का अर्थ 'स्वर्ण पुष्प' है। इसके पुष्प मुख्यतः शीतऋतु में खिलते है। गुलदाउदी का उपयोग कर्तित पुष्पों, आन्तरिक गृह सजा, पार्टी या विवाह के पंडाल एवं भवनों को सजाने में तथा धार्मिक स्थलों में पूजा के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त इसे गमलों और क्यारियों में लगाकर बागवानी, घर, पार्क इत्यादि जगहों को अंलकृत करने में भी किया जाता है। इसकी कुछ प्रजातियां कीटनाशक गुण वाली भी होती हैं। विभिन्न जलवायु परिस्थितियों में अपनी व्यापक उपयुक्तता के कारण गुलदाउदी ना केवल फूल प्रेमियों के बीच लोकप्रियता हासिल कर रही है बल्कि अच्छी आमदनी देने के कारण किसानों में भी इसकी खेती की और रूझान बढा है।

गमलों में लगाकर बढाये घर की सुंदरता

भूमि एवं जलवायु

गुलदाउदी की खेती विभिन्न प्रकार की मृदाओं में आसानी से की जा सकती है, परन्तु अधिक पुष्प उत्पादन हेतु अच्छे जल निकास वाली, बलुई–दोमट मृदा जो कि जीवांश पदार्थो से प्रचुर हो उत्तम मानी जाती है। गुलदाउदी कम प्रकाश अवधि वाला (शॉर्ट डे) पौधा है। इसकी खेती के लिए दिन का तापमान 20 सें 25^0 सेंटिग्रेड एवं रात का तापमान तापमान 15 सें 20^0 सेंटीग्रेड के बीच उचित माना जाता है। पुष्प कली बनने के लिए 14–15 घंटे की प्रकाश अवधि तथा कली से फूल विकसित होने के लिए 13–14 घंटे की प्रकाश अवधि की जरूरत होती है।

गुलदाउदी की किस्मों को तापमान की आव यकता अनुसार तीन वर्गो में विभाजित किया गया है :

- **थर्मोजीरो किस्में** : इस वर्ग की किस्मों में 10–25^0 सेंटीग्रेड के मध्य तापक्रम होने पर पुष्पन हो जाता है सामान्यतः रात का तापक्रम 16^0 सेंटीग्रेड होने पर पुष्पन बेहत्तर देखा गया है। वर्षभर उगायी जाने वाली अधिकतर किस्में इसी समूह से आती है।
- **थर्मोपॉजिटिव किस्में** : इस वर्ग की किस्मों में 10–13° सेंटीग्रेड के बीच लगातार कम तापमान

पुष्पन की कलियों को निकलने से रोकता है या विलंबित करता है व 27° सेंटीग्रेड पर कलियां तेजी से निकलना प्रारंभ होती है लेकिन फूल आने में देरी होती है।

- **थर्मोनेगेटिव किस्में** : इस वर्ग की किस्मों में कम तापमान पर पुष्प कलियों का निर्माण अधिक होता है। पुष्पों की अच्छी तरह वृद्धि एवं विकास के लिए 16 डिग्री सेन्टीग्रेड तापमान की अवधि को अच्छा पाया गया है परन्तु 21 डिग्री सेन्टीग्रेड या इससे अधिक होने पर पुष्प का विकास प्रभावित होता है।

गुलदाउदी की मनमोहक रंग एवं आकार–प्रकार वाली किस्में

प्रमुख किस्में

- **बड़े फूलों वाली (स्टैण्डर्ड) किस्में** : पूर्णिमा, स्नो बॉल, सोनार बंगला, स्नो डान, माउंटेनियर, पूसा केसर, पूसा सेन्टनेरी, टाटा सेंचुरी, व्हाईट स्टार, थाई चीन क्वीन आदि।
- **छोटे फूलों वाली (स्प्रे टाइप) किस्में** : अजय, फ्लर्ट, रत्ना, कुन्दन, यामल, नीलिमा, पूसा अनमोल, रवि किरन, जया, बसन्ती, यलो बंगला, बीरबल साहनी, पूसा गुलदस्ता आदि।

प्रवर्धन :

यह एक स्वतः प्रजनित पौधा है, जो पुराने पौधे से नये पौधे को उत्पन्न करता है जिन्हे मूलस्तरी विधि (सकर्स) के नाम से जाना जाता है। कलम के माध्यम से भी नये पौधे तैयार कर सकते हैं।

- **मूलस्तरी विधि (सकर्स)** : जनवरी के अंत में जब फूल मुरझाने लगे, पौधों को जमीन से लगभग 15–20 सेमी. ऊपर से काट दें। इससें जड़ के पास सकर्स निकलने प्रारंभ हो जाते है, जिन्हे 30–40 दिन बाद सावधानीपूर्वक निकालकर नर्सरी या क्यारी में छायादार स्थान पर लगा देवें।
- **कलम (कटिंग)** : व्यवसायिक रूप सें गुलदाउदी के पौधों का प्रवर्धन तना के भीर्शस्थ भाग से तैयार किया जाता है। कलम तैयार करने का सर्वोत्तम समय जून–जुलाई माना गया है उस समय इसका रंग सम्पूर्ण हरा होता है। कलम की लम्बाई 10–15 सेमी. तथा व्यास 3 से 5 मिलीमीटर होना चाहिये। कलमों के भीर्श भाग पर 2–4 पत्तियां छोड़कर बाकी निचली पत्तियों को हटा देवें। बेहतर जड़ निर्माण के लिए कटिंग के नीचे के भाग (आधा इंच से कम) को रूटिंग हार्मोन (आईबीए का 1000 पीपीएम घोल) में डुबोकर उचित तैयार माध्यम में लगा देवें।

कलम द्वारा तैयार गुलदाउदी का स्वस्थ पौधा

रोपण का समय व दूरी :

मौसम व स्थान विशेष के आधार पर गुलदाउदी के तैयार पौधों को जुलाई–अगस्त माह में पंक्ति सें पंक्ति व कतार से कतार की दूरी 30 सेमी रखते हुये कर देवें। पौध रोपण के तुरंत बाद सिंचाई कर दे।

सिंचाई :

गुलदाउदी उथली जड़ों वाली फसल हैं इसमें जड़ के पास जल का जमाव होने से जड़े सड़ने का डर रहता है। अधिक मात्रा में पानी देने से पौधें भी मर जाते हैं। अतः जल निकास का उचित प्रबन्धन होना चाहिए। पौधों को पानी की आवश्यकता का पता इसकी कोमल पत्तियों व शाखाओं की ताजगी खोने से लगाया जा सकता हैं।

खाद एवं उर्वरक :

खाद व उर्वरको की मात्रा, मृदा की उर्वरता तथा फसल को दी गयी कार्बनिक खादों की मात्रा पर निर्भर करती है। संतुलित मात्रा में खाद व उर्वरकों का प्रयोग पौधों की अच्छी बढवार एवं पुष्प उत्पादन के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। खेत तैयार करते समय सामान्यतः 15–20 टन अच्छी सड़ी गोबर की खाद मिट्टी में मिला देवें। खाद के अलावा 200 किलोग्राम नत्रजन, 150 किलोग्राम फास्फोरस व 100 किलोग्राम पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर सें प्रयोग करें। नत्रजन की आधी मात्रा, फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा खेत की तैयार के समय डाल देवें। शेष बची नत्रजन की मात्रा रोपण के 45 दिन बाद निराई–गुड़ाई के समय प्रयोग करें। पुष्प डंडियों पर कलियां खिलने लगे एवं रंग दिखाई देने लगे तो किसी भी उर्वरक का इस्तेमाल नहीं करना चाहिये।

कृषि क्रियाएं

- **पिंचिंग या शीर्षनोचन** : यह प्रक्रिया रोपण के लगभग 30 दिन बाद जब पौधा 8–10 सेमी. का हो जाए तब करें। इससें सहायक भाखाओं की वृद्धि एवं पौधों का फैलाव अधिक होता है। यह स्प्रे टाइप गुलदाउदी में अधिक संख्या में फूल प्राप्त करने के लिए की जाती है। इसमें पौधे के शीर्शस्थ भाग को हाथ सें नोच कर अलग कर देते है।
- **डिसबडिंग या निष्कालिकायन** : यह क्रिया स्टैण्डर्ड टाइप गुलादाउदी में बड़े फूल प्राप्त करने के लिए की जाती है। इसमें हर शाखा से अतिरिक्त कलियों को निकालकर पौधे पर केवल 1–2 कलियां छोड़ देवे। सिंगल कोरियन और स्प्रे वर्ग की किस्मों में डिसबडिंग करने की आवश्यकता नहीं होती है।
- **डिशूटिंग** : यह क्रिया पौधों में निश्चित संख्या में शाकीय शाखा रखने के लिए की जाती हैं। यह स्टैण्डर्ड टाइप किस्मों मे की जाती है। इस प्रक्रिया में एक पुश्प डंडी पर अन्य दूसरी भाखाएँ निकलने के बाद उन भाखाओं को 1–2 सेमी लम्बी होने पर पुश्प डंडियों से अलग कर देते है। ऐसा करने सें एक पुश्प डंडी पर केवल एक भीर्शस्थ पुश्प कलिका ही बनी रहती है।
- **स्टेकिंग/सहारा देना** : पुष्प डंडी का पूर्ण रूप सें सीधा होना गुणवत्तायुक्त पुश्प उत्पादन की विशेषता है। यह कार्य बाँस की खपच्ची लगाकर अथवा नायलॉन की जाली लगाकर कर सकते है।

फूलों को तुड़ाई व भंडारण

गुलादाउदी की स्टैण्डर्ड टाईप किस्मों के फूलों की कटाई पुष्प पूर्णतया खिलने पर करें जब उनकी बाहरी पंखुड़ियां पूरी तरह सी सीधी हो जाए। जबकि स्प्रे टाईप किस्मों की तुड़ाई उस समय करें जब टहनी पर खिले सबसे पहले फूल पूर्णतया खुल जाए। फूल वाली टहनी को जमीन से लगभग 10 सेमी. की उंचाई से काटना चाहिए। फूलों की तुड़ाई भाम के समय अथवा सुबह जल्दी कर लेनी चाहिए। तुड़ाई के बाद फूलों को छायादार स्थान पर रखे। गुलादाउदी के फूलों को 0.5 से 1^0 सेंटीग्रेड तापमान पर 10–15 दिनों तक सुरक्षित रखा जा सकता है।